ACKNOWLEDGEMENT

We sincerely express our gratitude to **"Teerthdham Manglayatan"** from where we have sourced **"Badhte Charan Senior K.G"**.

"Teerthdham Manglayatan" have taken due care, However, if you find any error, for which we request all the reader to kindly inform us at info@vitragvani.com or to Info@Manglayatan.com **"Teerthdham Manglayatan"**

हमारे जीवन शिल्पी
धर्मपिता
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के
कर कमलों में सविनय समर्पित

हम हैं आपके,
नन्हें-मुन्ने ज्ञायक

वीर बालक

महावीर प्रभु की हम संतान,
हैं तैयार, हैं तैयार....
जिनशासन की सेवा करने,
हैं तैयार, हैं तैयार...
सिद्धपद का स्वराज लेने,
हैं तैयार, हैं तैयार...
अरहन्त प्रभु की सेवा करने,
हैं तैयार, हैं तैयार...
ज्ञानी गुरु की सेवा करने,
हैं तैयार, हैं तैयार...
सम्यग्दर्शन प्राप्त करने,
हैं तैयार, हैं तैयार...

चार मंगल

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं,
सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

४

चार उत्तम

चत्तारि लोगुत्तमा
अरहंता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

५

चार शरण

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
अरहंते सरणं पव्वज्जामि
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि
साहू सरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

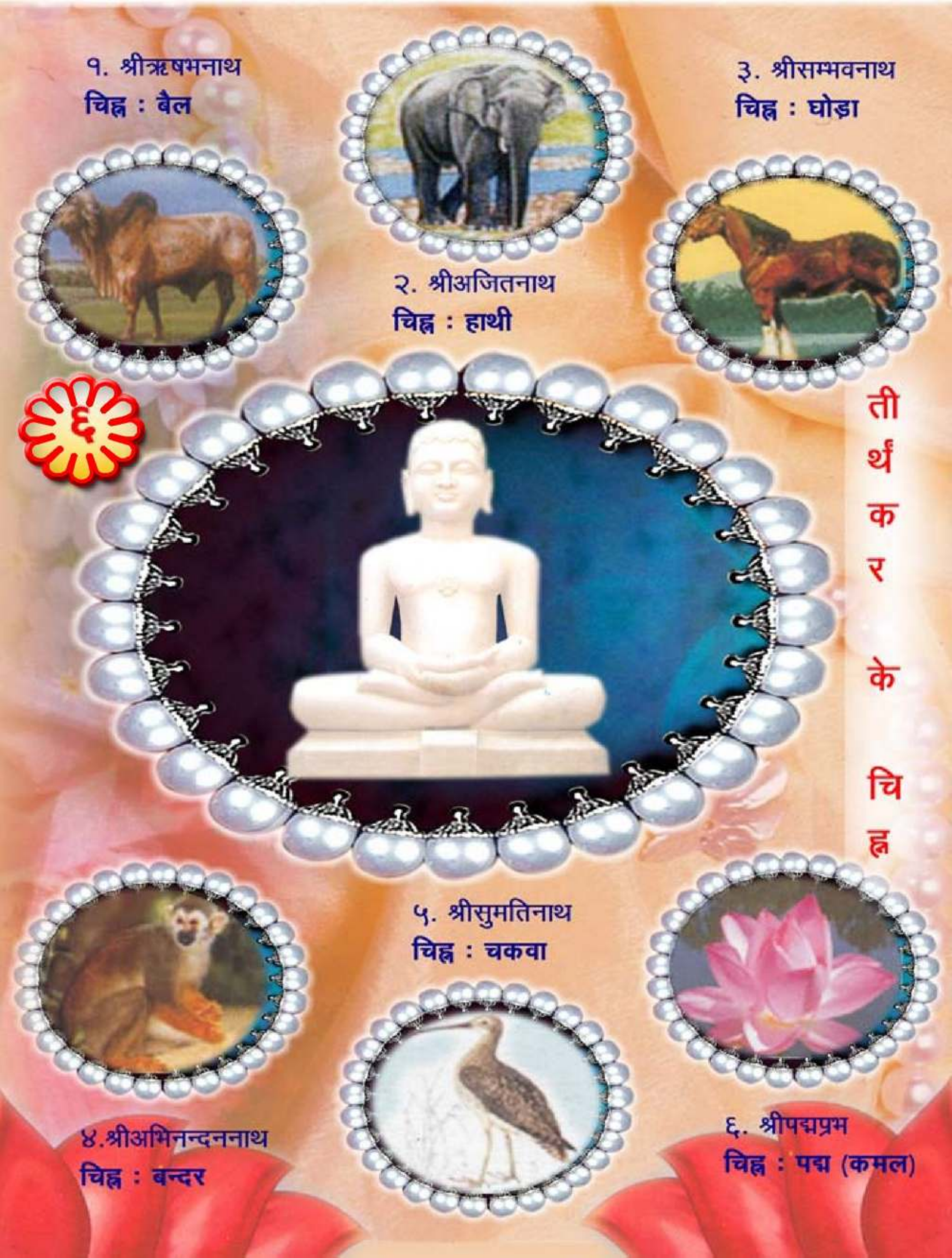

तीर्थंकर के चिह्न
६
१. श्रीऋषभनाथ
चिह्न : बैल
२. श्रीअजितनाथ
चिह्न : हाथी
३. श्रीसम्भवनाथ
चिह्न : घोड़ा
४.श्रीअभिनन्दननाथ
चिह्न : बन्दर
५. श्रीसुमतिनाथ
चिह्न : चकवा
६. श्रीपद्मप्रभ
चिह्न : पद्म (कमल)

तीर्थकर के चिह्न

७. श्रीसुपार्श्वनाथ
चिह्न : स्वस्तिक

८. श्रीचन्द्रप्रभ
चिह्न : चन्द्र

९. श्रीपुष्पदन्त
चिह्न : मगर

१०. श्रीशीतलनाथ
चिह्न : कल्पवृक्ष

११. श्रीश्रेयांसनाथ
चिह्न : गेंडा

१२. श्रीवासुपूज्य
चिह्न : भैंसा

तीर्थंकर के चिह्न

१३. श्रीविमलनाथ
चिह्न : शूकर

१४. श्रीअनन्तनाथ
चिह्न : सेही

१५. श्रीधर्मनाथ
चिह्न : दण्ड

१६. श्रीशान्तिनाथ
चिह्न : हिरण

१७. श्रीकुन्थुनाथ
चिह्न : बकरा

१८. श्रीअरनाथ
चिह्न : मछली

तीर्थंकर के चिह्न

१९. श्रीमल्लिनाथ
चिह्न : कुम्भ

२०. श्रीमुनिसुव्रतनाथ
चिह्न : कछुआ

२१. श्रीनमिनाथ
चिह्न : कमल

२२. श्रीनेमिनाथ
चिह्न : शंख

२३. श्रीपार्श्वनाथ
चिह्न : सर्प

२४. श्रीमहावीरस्वामी
चिह्न : सिंह

हमारा संकल्प

सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे, सप्त भयों से नहीं डरेंगे।
सात तत्त्व का ज्ञान करेंगे, जीव-अजीव पहिचान करेंगे।
स्व-पर भेदविज्ञान करेंगे, निजानन्द रसपान करेंगे।
पंच प्रभु का ध्यान धरेंगे, गुरुजन का सम्मान करेंगे।
जिनवाणी का श्रवण करेंगे, पठन करेंगे, मनन करेंगे।
रात्रि भोजन नहीं करेंगे, बिना छना जल काम न लेंगे।
निज स्वभाव को प्राप्त करेंगे, मोहभाव का नाश करेंगे।
राग-द्वेष का त्याग करेंगे, भक्त नहीं, भगवान बनेंगे।

११

हमारे देव

अरहन्त तथा सिद्ध हमारे देव हैं।
सीमन्धर भगवान अरहन्त हैं।
महावीर भगवान सिद्ध हैं।
अरहन्त और सिद्ध प्रभु, राग-द्वेष और जन्म-मरण आदि दोषों से रहित हैं।
हमें प्रतिदिन भगवान के दर्शन करने चाहिए।

शास्त्र अर्थात् १२ जिनवाणी

यह एक शास्त्र है। शास्त्र हमारे आचार्यों द्वारा रचित होते हैं।
मोह-राग-द्वेष दूर करने का इसमें उपदेश है।
मोह-राग-द्वेष सिखाये,
ऐसी पुस्तक को शास्त्र नहीं कहा जाता।
प्रतिदिन शास्त्र स्वाध्याय करना चाहिए।

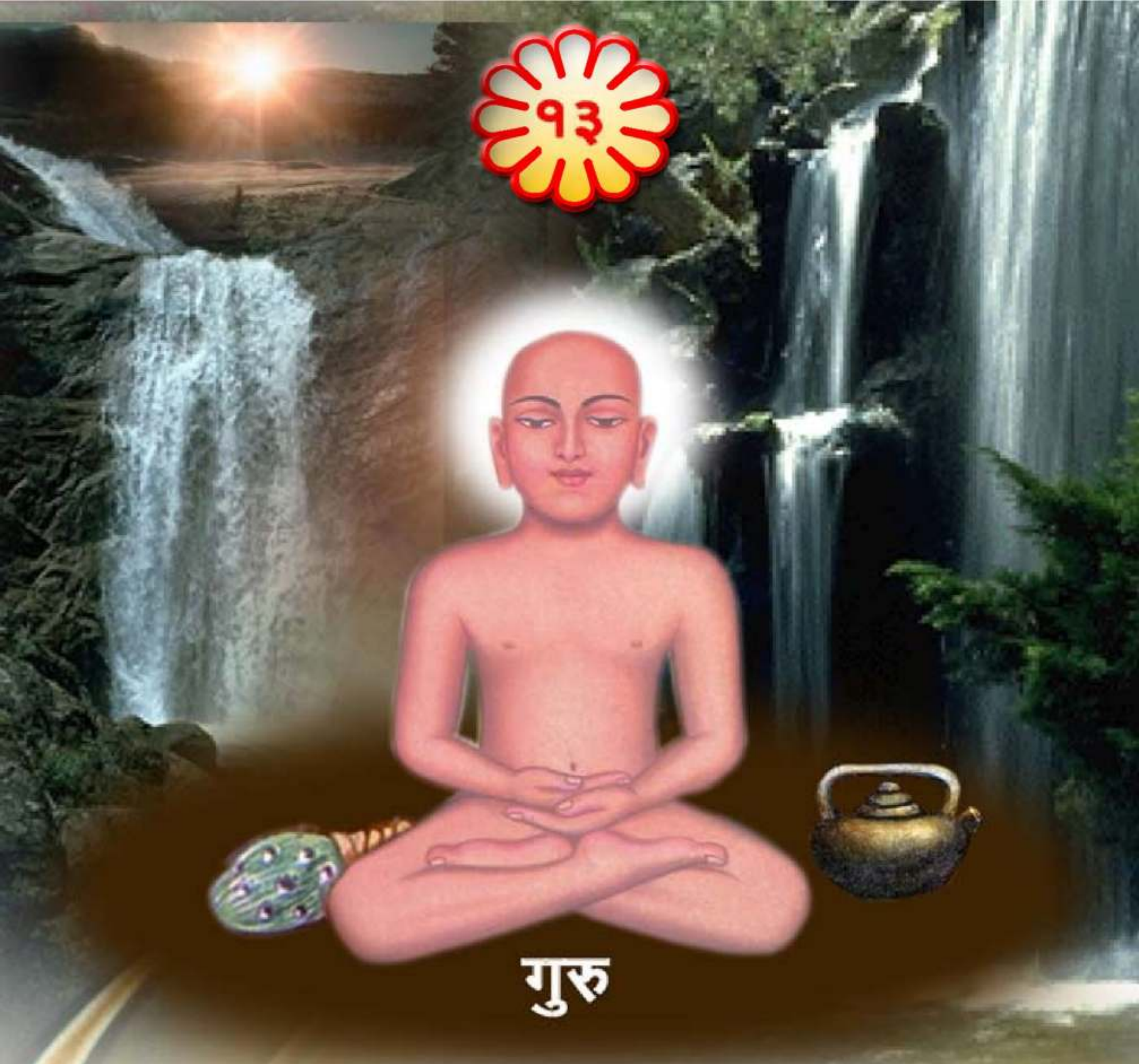

यह मुनिराज हैं। मुनिराज नग्न दिगम्बर ही होते हैं। मुनिराज वन में रहते हैं और आत्मा का ध्यान करते हैं। आचार्य, उपाध्याय और साधु - ये तीनों मुनिराज हमारे गुरु हैं, ऐसे मुनिराजों को हम वन्दन करते हैं।

१४
संस्कारी बालक
पढ़ेंगे लिखेंगे,
करेंगे अच्छा काम;
धर्म में भी हम,
करेंगे ऊँचा नाम ।।
सुबह जल्दी उठना,
और करना प्रभु ध्यान;
पंच परमेष्ठी को,
करना प्रणाम ।।

१५

मेरा कहा तुझे मानना पड़ेगा।
मैं तुझे बहुत मारूँगा।
बोलो बच्चों ! मैं हूँ कौन ?

क्रोध, क्रोध, क्रोध !

क्रोध करने से,
विवेक का नाश होता है।
इसलिए क्रोध कभी नहीं करना।

चार कषाय

मैं राजा हूँ।
सभी पर मेरा अधिकार है।
मैं सब कुछ जानता हूँ।
बोलो बच्चों ! मैं हूँ कौन ?

मान, मान, मान !

मान, दुर्गति का कारण है।
इसलिए मान कभी नहीं करना ।

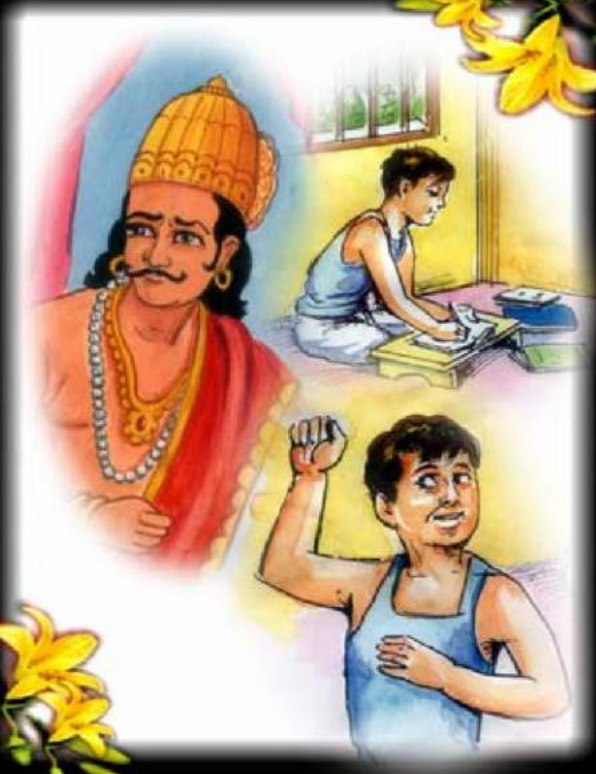

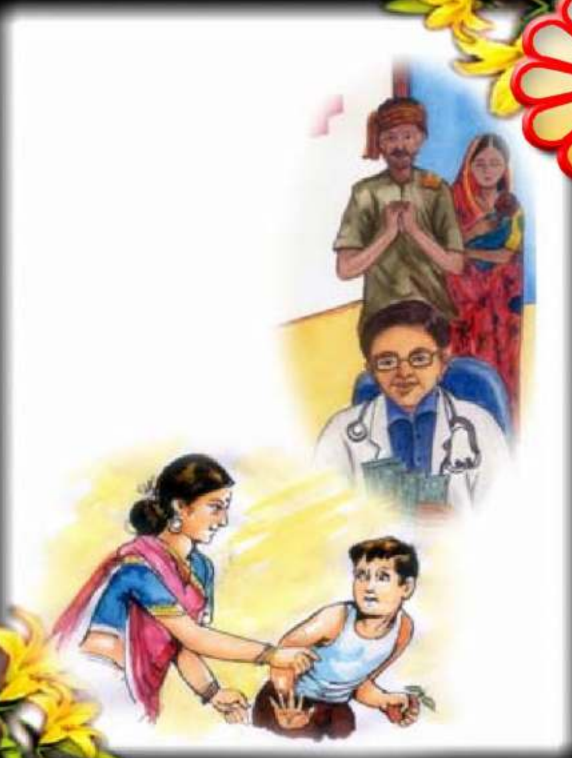

१६

मैं भोले लोगों को ठगता हूँ।
मैं मम्मी से झूठ बोलता हूँ।
बोलो बच्चों ! मैं हूँ कौन ?

माया, माया, माया !

माया करने से विश्वास नष्ट होता है।
मायाचारी का फल पशुगति है।
इसलिए मायाचारी
कभी नहीं करना।

मैं पैसा खूब कमाऊँगा।
गाड़ी, बंगला बनाऊँगा।
बोलो बच्चों ! मैं हूँ कौन ?

लोभ, लोभ, लोभ !

लोभ सर्व पाप का मूल है।
लोभी सदा दु:खी रहता है।
इसलिए लोभ कभी नहीं करना।

हाय हल्लो छोड़िये... १७ जय जिनेन्द्र बोलिये...

सुबह उठे मम्मी से बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र...
पापा से भी सुबह बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र...
दादा से दादी से बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र...
दीदी से भैया से बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र...
चावल ले मन्दिर में आये, पण्डितजी को देख के बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र...
पुस्तक ले पाठशाला आये, दीदी जी को देख के बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र।

१८

एक थी बिल्ली

एक दिन राजू को रास्ते में एक बिल्ली मिलती है।
राजू उससे पूछता है, अरे... बिल्ली ! तुझे ऐसा शरीर क्यों मिला ?
बिल्ली कहती है, क्या कहूँ राजूभाई ? मैंने पिछले भव में खूब मायाचारी की थी; बहुत अत्याचार किये थे, इसलिए ऐसा शरीर मिला।
राजू कहता है, देख ! अब ऐसे परिणाम मत करना। सरल परिणाम रखकर मनुष्यभव प्राप्त करना और देव-शास्त्र-गुरु को प्राप्त कर, आत्महित साधना।

प्यारे बच्चों ! मायाचारी के फल में पशुगति मिलती है और पशुगति में अनेक प्रकार के दु:ख भोगने पड़ते हैं। इसलिए मायाचारी कभी नहीं करना।

१९

बोलो बच्चों

तुम कौन हो ? – जीव, जीव, जीव।
तुम्हारे अन्दर क्या है ? – ज्ञान, ज्ञान, ज्ञान।
तुम्हारा काम क्या है ? – जानना, जानना, जानना।
शरीर कौन है ? – अजीव, अजीव, अजीव।
शरीर में ज्ञान है ? – ना, ना, ना।
क्या शरीर जानता है ? – ना, ना, ना।
शरीर और तुम एक हो ? – ना, ना, ना।

जीव

शरीर

२०

अच्छी सीख

पंच परमेष्ठी को कभी नहीं भूलना।
प्रतिदिन प्रात: उनका स्मरण करना।
हिंसा कभी नहीं करना।
गुरुओं की हमेशा विनय करना।
प्रतिदिन देवदर्शन और पूजन करना।
जिनवाणी का स्वाध्याय हमेशा करना।
चार कषायों का त्याग करना।